P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-9* December- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

नयी कविता का वैशिष्ट्यः आधुनिक हिन्दी कविता से पार्थक्य के संदर्भ में एक अध्ययन

Characteristics of New Poetry: A Study in The Context of Segregation From Modern Hindi Poetry

Paper Submission: 12/12/2020, Date of Acceptance: 25/12/2020, Date of Publication: 26/12/2020

सियाराम मीणा
सह आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, कोटा,
राजस्थान, भारत

सारांश

आधुनिक हिन्दी कविता का आरम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है, इसके बाद हिन्दी कविता द्विवेदीयुग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता जैसे कई पड़ाव पार कर चुकी है। इसमें हर युग की अपनी अलग काव्य–दृष्टि और संवेदना रही हैं। यद्यपि इसमें सतत् विकास की एक रूपरेखा भी स्पष्ट है। आधुनिक हिन्दी कविता के इस परिवर्तनशील इतिहास में नयी कविता का अपना एक अलग व्यक्तित्व हैं। यह परम्परा से रस ग्रहण करके भी, शिक्षा ग्रहण करके भी उसकी पुजारी नहीं है। उसके पास स्वयं का दृष्टिबोध है। यह कविता पुनरावृति में नहीं, प्रबुद्ध चेतना द्वारा युग की पीठिका पर प्रयोग करके आगे बढ़ने और जीवन मूल्य प्राप्त करने में विश्वास रखती है। वास्तव में नयी कविता का व्यक्तित्व नितान्त संवेदनशील बौद्धिकता, समसामयिकता और आधुनिक बोध से सम्पन्न रहा है। परिवेशगत यथार्थ और लेखकीय अनुभूति से उसका अटूट रिश्ता है, इस दृष्टि से यह अपनी पूर्ववर्ती और परवर्ती काव्यधाराओं से विशिष्ट रही है जिसके कारण इसकी अलग पहचान बनती है।

The beginning of modern Hindi poetry is believed to be from the Bharatendu era, after which Hindi poetry has crossed many stages such as Dwivediuga, Chhayavism, Progressivism, Experimentalism, New Poetry, Sathotari Kavita. Every era has its own poetic vision and sensations. Although it also has a clear outline of sustainable development. The new poem has its own distinct personality in this changing history of modern Hindi poetry. It is not a priest even after receiving the juice from this tradition, even after receiving education. He has his own vision. This poem, not in repetition, believes in using the enlightened consciousness on the pedestal of the era to move forward and attain life value. In fact, the personality of the new poem has always been full of sensitive intellectualism, contemporaryism and modern perception. It has an unbreakable relationship with the ambient reality and the literary experience, in that it has been distinguished from its predecessor and subsequent poetry, due to which it is distinguished.

मुख्य शब्द : नयी कविता, विभेदक तत्व, वैशिष्ट्य, विसंगति, क्षण, व्यक्तित्व, काव्य–दृष्टि, यथार्थ, समसामयिकता, संवेदना, शिल्प, भावबोध, सौंदर्य बोध, तर्क, बुद्धि, विवेक, व्यष्टि, समष्टि, वैज्ञानिक चेतना।
New Poetry, Differential Elements, Specialty, Dissonance, Moment, Personality, Poetry, Reality, Occasionality, Sensation, Craft, Emotion, Aesthetic, Logic, Wisdom, Conscience, Person, Samajya, Scientific Consciousness.

प्रस्तावना

नयी कविता की संवेदना और दिशाएं के धरातल बहुत व्यापक है। व्यष्टि और समष्टि के समस्त संवेदनात्मक बिन्दु उसके विषय बन जाते हैं। उषा कुमारी ने अपनी पुस्तक में उसकी दिशाओं के प्रति महत्वपूर्ण संकेत किया है –अपरंपरित होने का गौरव, रूढ़ियों से विद्रोह की दिशा, व्यक्तिवादिता और यांत्रिकता की दिशा, नगर की ओर उन्मुख होने की दिशा, मशीन एवं मनुष्य के बीच संघर्ष की दिशा, विसंगतियों का चित्रण अधिक, समसामयिक चेतना के प्रति

जागरूकता की दिशा, भारतीय नारी की स्वतंत्रता एवं स्वाया के लिए संघर्ष की दिशा, देश की बीहड़ परिस्थितियों से प्रभावित होने की दिशा, विदेशी आंदोलनों के प्रति सजगता की दिशा, क्षणिकता की दिशा, पाठकों को उनकी स्वतंत्रता वापस करने की दिशा, अनगढ़ता और अलगाव की दिशा, क्षण और वैयक्तिकता के प्राधान्य की दिशा, प्रेरणा–स्रोतों का स्वीकार, विभिन्न वादों का सम्मिश्रण'[1] आदि नयी कविता के परिपार्श्व और दिशा है।

शोध का उद्देश्य

नयी कविता न केवल हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का एक विशिष्ट रचना–खण्ड है अपितु हिन्दी साहित्य के इतिहास में 20वीं सदी के सो वर्षों में रचे गये काव्य में से संवेदना, शिल्प और वैचारिक धरातल की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपलब्धी है। इस पर पर्याप्त मात्रा में आलोचना कार्य हुआ तथा आलोचना के मानक भी निर्धारित हुए। लेकिन नयी कविता की उन विशिष्टताओं को रेखांकित करना एक मौलिक कार्य होगा जो उसे 20वीं सदी की आधुनिक कविता से इसे अलग करती हैं। इस शोध पत्र की आवश्यकता और उद्देश्य इसी पर केन्द्रीत है।

साहित्य समीक्षा

हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद के अनन्तर 1950–51 से बाद जिस नयी कविता का सृजन हुआ उस पर आलोचकों, अध्येयताओं और अनुसंधानकर्ताओं ने पर्याप्त मात्रा में लिखा जिनमें कई मानक आलोचना ग्रंथ सामने आये। साथ ही स्वयं नयी कविता के कवियों ने भी नयी कविता के बारे में अपने वैचारिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है जो आलोचकों, समीक्षकों व अनुसंधानकर्ताओं के लिए आधार का काम करता है। हिन्दी नव लेखन– रामस्वरूप चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ काशी 1960, नयी कविता के प्रतिमान– डॉ.लक्ष्मीकांत वर्मा भारती प्रेस प्रकाशन दरभंगा रोड इलाहबाद प्र.सं. 1957, नयी कविता नये धरातल–डॉ.हरचिरण शर्मा पदम प्रकाशन जयपुर, नयी कविता के प्रबंध काव्यः शिल्प और जीवन दर्शन –डॉ. उमाकांत गुप्त प्र.सं.वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1988, नयी कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध : मुक्तिबोध विश्वभारती प्रकाशन, दिल्ली 1964, नयी कविता का मूल्यांकन– डॉ.हरिचरण शर्मा, आशा प्रकाशन गृह,नयी दिल्ली 1972, नयी कविता : सीमा और संभावनाएं– गिरिजाकुमार माथुर, अक्षर प्रकाशन,दिल्ली, 1966, नई कविता : स्वरूप और प्रवृत्तियां–उषा कुमारी, प्रभात प्रकाशन, 2017, www.hindikunj.com/2018/05/nayi-kavita.html 12 मई 2018, अज्ञेय के काव्य में आधुनिक भाबोध–https://www.iasbook.com/hindi/agyeya-kavya-aadhunik-bhava-bodh/ 16 जुलाई 2020) आदि। इसके अलावा कई आलोचना ग्रंथ एवं लेख प्रकाशित है जो नयी कविता पर शोध के लिए प्रमुख श्रोत हो सकते हैं। नयी कविता में आज भी पर्याप्त मात्रा में शोध कार्य हो रहे हैं।

आधुनिक हिन्दी कविता से पार्थक्य एवं विभेदकता

नयी कविता ने प्रयोगवाद की संकुचिता से ऊपर उठकर उसे अधिक उदार और व्यापक बनाया...वह किसी भी दर्शन के साथ बंधी नहीं है।'[2] ऐसे कई तत्व है जिनके आधार पर नयी कविता को आधुनिक हिन्दी कविता में अलग पहचान मिली है, यथा– 'भावबोध के व्यापक और यथार्थ धरातल, सौंदर्य बोध में युगानुरूप परिवर्तन, जीवन्त कुण्ठा, वर्जनाराहित्य, बौद्धिक और वैज्ञानिक चेतना का समावेश, प्रयोगशील काव्य दृष्टि और आधुनिकता बोध, सत्यान्वेषण, मूल्यान्वेषण तथा तर्कसम्मत मूल्यों की स्थापना, रूढ़ि विद्रोह और परम्परा के प्रति विवेकसम्मत दृष्टिकोण, व्यक्तित्व सम्पन्नता, कर्मनिष्ठ संघर्षशील और पीड़ासिक्त सामान्य मानव की प्रतिष्ठा, व्यक्ति चेतना, अहम् का विलयन तथा सामाजिक चिन्तन की प्रधानता, आस्था और जिजीविषा, अस्तित्व और क्षण बोध तथा भाषा और शिल्प की नवीनता आदि।

नयी कविता का भावबोध पूर्ववर्ती कविता से सर्वथा भिन्न है। नयी कविता के भावबोध में तर्क, बुद्धि, विवेक, आधुनिक बोध और युगीन यथार्थ का योग है। नयी कविता का भाव बोध किसी वाद से या संकुचित धारणा से नहीं, परिस्थितियों की जटिलता से उत्पन्न होता है तथा विवेक और बुद्धि के धरातल पर तपकर जीवन की रागात्मकता को व्यक्त करता हैं। युगीन परिवेश और अन्तरबाह्य समग्रता इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है। नवीन भावबोध के धरातल यथार्थ हैं और यह यथार्थ बहुत ही व्यापक है। इसलिए यह नये–नये संदर्भों का उद्घाटन करता है। भारतेन्दु युग में भी हमें वादरहित संवेदना और यथार्थ भावबोध के दर्शन होते हैं, लेकिन कवियों का सारा ध्यान देश की पराधीनता, राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार की ओर रहा है। वस्तुतः भारतेन्दु और द्विवेदी युग के काव्यों का भावबोध मध्ययुगीन संस्कारों और नवीनता के द्वन्द्व और आदर्श से मंडित रहा है। युगीन परिस्थितियों की जटिलता के बावजूद भी छायावाद का भावबोध इनका संस्पर्श प्रत्यक्ष रूप से नहीं कर सका। वह निराधार कल्पना, वायवीयता, रहस्यात्मकता और भावनाओं के रेशमी तानो–बानों से युक्त दिखाई देता है। युग जीवन की जटिलता के यथार्थ को वह व्यक्त नहीं कर सका। यथार्थ और संघर्ष के अभाव के कारण छायावाद का भावबोध पलायन का शिकार हुआ। वह असीम और अनन्त की कल्पना से आक्रान्त, एकांत, निर्जन, निष्क्रिय, निराशा, नशे, मादकता और असफल रहस्यवाद में परिणत हो गया। वास्तव में छायावाद के भावबोध में ''जीवन से सम्बन्धित किसी भी रचनात्मक दृष्टिकोण का अभाव था ... छायावाद जीवन के उन तत्वों को आत्मसात नहीं कर सका, जिनके कारण कोई भी साहित्य अधिक स्थायी हो पाता है। जिन सूक्ष्म तन्तुओं से उसका निर्माण हुआ था, वे संघर्षों के कठोर युग के उपयुक्त न थे। छायावाद में रेशम था, जिससे संकट के दिनों में सिपाहियों की वर्दी नहीं बन सकती थी।''[3]

लक्ष्मीकांत वर्मा ने नयी कविता के भावबोध को पूर्ववर्ती कविताओं से भिन्न, यथार्थ और मूल्यपरक घोषित किया है– ''यह भावबोध न तो छायावाद के उदात्त मानववाद से प्रभावित है और न ही इसका सम्बन्ध उस खोखली राष्ट्रीयता से है जो दिनकर जैसे कवियों की रचनाओं में केवल न्यूराटिक ओज की पुंसत्वहीन साहसिकता के साथ विकसित हुई है, न तो इस भावबोध में यथार्थ से पलायन करके स्वर्णयुग की उषा–वेला की अप्रतिहत प्रतीक्षा है, न तो इसमें उस स्वर्ण धूलिका का

पुट हैं जो केवल पौष्ठिक पदार्थ केवल पर समाज के अन्तर मन में एवं अन्तर्मन की अन्तश्चेतना में विराटता का रहस्यमय कलोल करती चलती है। यह नया भावबोध उस कुहासे की झीनी चादर को भी नहीं स्वीकार करता जिसमें स्वप्न और सत्य की सापेक्षता अनावश्यक समझी जाती है।''[4] नयी कविता का भावबोध किसी रूढ़ि से कुण्ठित नहीं है, वह वर्जना और कुण्ठारहित है। इसलिए उसमें जहाँ आशा है, वहीं निराशा भी है, निर्माण तो ध्वंस भी, शिव है तो अशिव भी, सुन्दर है तो असुन्दर भी, आस्था है तो अनास्था भी। नयी कविता का भावबोध मनुष्य के मनुष्यत्व से और उसके परिवेश से उत्पन्न होता है, देवत्व की भावना से नहीं। –

हर आदमी में देवता हैं
और देवता बड़ा बेदा है
हर आदमी में जन्तु है
जो पिशाच से न थोड़ा है
हर देवतापन
हमको नपुंसक बनाता है।[5]

वास्तव में नयी कविता का भावबोध जीवन की समग्र परिस्थितियों और चेतना को लेकर चला है। यह समग्रता हमें भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद और प्रगतिवाद में देखने को नहीं मिलती। इनमें एकांगी दृष्टि विद्यमान रही है। नयी कविता के भावबोध के विषय में डॉ. राजकुमार ने लिखा है कि ''यह बौद्धिक चिंतना, वैज्ञानिक विश्लेषण, सतत् विकासशील दृष्टि, प्रयोगशीलता, रागात्मक तटस्थता आदि से सम्पन्न एक संस्कार प्रवाह है, एक बोध प्रक्रिया है, मूल्य या तथ्य नहीं, बल्कि एक भावधारा है। इस भावधारा का विकास यांत्रिक सभ्यता के विकास, विश्वयुद्धों के कारण हुए मानवीय मूल्यों के विघटन तथा वृहद् सामाजिक विघटन के कारण हुआ है। इसमें ठहराव और सिद्ध सत्य को नकारकर सतत् विकासशील जीवन दृष्टि को अपनाया गया है। जीवन दृष्टि में निजी दायित्व की भावना भी है।''[6] नयी कविता का भावबोध समग्र परिवेश और मानव दशाओं का पर्याय है। वह जीवन की विघटनशील प्रवृत्तियों का साक्षात्कार करता हुआ विकासशील और यथार्थ मूल्यों में विश्वास रखता है।

नयी कविता में यथार्थ की व्यापकता के कारण उसका सौंदर्यबोध भी पूर्ववर्ती काव्यान्दोलनों से भिन्न और व्यापक है। नयी कविता का सौंदर्यबोध किसी संकीर्ण परम्रागत दायरे में बँधा हुआ नहीं है। वह जीवन, परिवेश और यथार्थ से युक्त होने के कारण गतिशील और सक्रिय है। नयी कविता का सौंदर्य मात्र आह्लादक नहीं, चोट करने वाला भी तथा पीड़ा और दर्द युक्त भी है ––

मैंने कब कहा कि मेरा धर्म है
मर्म सलाहकार व्यथा सुला देना,
मैंने कब कहा कि मेरा कर्म है
पिचके गुब्बारों को गैस भर फुला देना,
यह तो वे करते हैं / जो असत्य के चश्मे
आँख पर चढ़ाकर बस हरा हरा देखते हैं
मैं नया कवि हुँ / इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है
तो मैंने अपना कवि धर्म पूरा किया
चाहे मर्म सहलाया न हो, कुरेदा हो।[7]

नयी कविता का सौंदर्य बोध मानव और उसके परिवेश की शत्–शत् कोटियों को आत्मसात करके चला है। वह बौद्धिक दृष्टि धारण करते हुए मनुष्य के सुख–दुख के प्रति मुक्त और यथार्थ दृष्टि रखता है। वह सुन्दर और असुन्दर, अभिभूत ओर विक्षिप्त क्षणों में भेद नहीं मानता, इनमें किसी के प्रति हीन भावना नहीं रखता। वस्तुतः आज के मनुष्य को और उसकी वृत्तियों को परम्परागत सौंदर्य सूत्र में परखना असम्भव है। आज की सौंदर्य अभिरूचियों के सामने परम्परागत सौंदर्य बोध बौना प्रतीत होता है। परम्परागत सौंदर्य आयामों को अपनाकर कविता वर्तमान जीवन की समग्रता से नहीं जुड़ सकती। अगर वह परम्परागत सौंदर्य मानदण्डों को अपनाती है तो असफल हो जायेगी। छायावाद की असफलता के मूल में यही रहस्य है। वस्तुतः आज के सौंदर्य बोध में कमल और कैक्टस, कीचड़ और काई, सुगन्ध और दुर्गन्ध, मूल्य और मूल्यहीनता सभी उसके आयाम बनकर आते हैं। आज का सौंदर्य बोध बढ़ गया है। सर्वेश्वर की ये पंक्तियाँ स्पष्टीकरण के लिए पर्याप्त हैं ––

आज की दुनिया में / विवशता / भूख / मृत्यु
सब सजाने के बाद ही / पहचानी जा सकती है।
बिना आकर्षण के दूकानें टूट जाती हैं।
शायद कल उनकी समाधियाँ नहीं बनेंगी
जो मरने के पूर्व / कफन और फूलों का
प्रबन्ध नहीं कर लेंगे।
ओछी नहीं है दूनिया / मैं फिर कहता हूँ
महज उसका सौंदर्य – बोध बढ़ गया हैं। [8]

नयी कविता का सौंदर्य बोध कृत्रिम आदर्शों को त्यागकर, समाज में व्याप्त कीचड़, काई, पतन, दिग्भ्रम, निराशा, त्रास, अपमान, अनास्था, अविश्वास, कुण्ठा, वासना, शोषण, अनाचार, दुख–दर्द, अजनबीपन, हिंसा, पाप, क्रन्दन, संघर्ष, विघटन, अनस्तित्व, मृत्यु, स्वार्थ, द्वेश, विषमता, टूटन, असहायता, विवशता, तनाव, भय, संशय तक पहुँचकर उसकी टोह लेना चाहता है। इसके उपरांत ही नयी कविता आस्था, मूल्य और विश्वास के कण प्राप्त करती है। इस संदर्भ में भारती की 'एक अवतार में'[9] कविता महत्वपूर्ण है। नया कवि समाज की इस वस्तुस्थिति से साक्षात्कार करके आगे बढ़ता है, इससे वह मुँह नहीं मोड़ता –

एक स्तर पर / विद्वेश, क्रूरता, हिंसा, बेईमानी
सब कुछ इतनी संभव है कि स्वाभाविक लगे
और उसी स्तर पर हममें से हर एक जी सकता है
पागलों की तरह / एक दूसरे से त्रस्त, पीड़ित और अपमानित।[10]

नयी कविता का सौंदर्य बोध परम्परागत सौंदर्य बोध से भिन्न होने के कारण परम्परावादी इसे अश्लील और वल्गर बताते हैं, भोंडा करार देते हैं। नयी कविता का सौंदर्य बोध जीवन की प्रत्येक

घटना, दृश्य, परिवेश और क्षण का साक्षात्कार करता है, इसलिए वह कटु भी हैं, स्वादिष्ट भी, मूल्यहीन भी है और मूल्यान्वेषक भी। इस दृष्टि से यह भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद से भिन्न है। प्रयोगवाद से इसलिए, क्योंकि यह आस्था, विश्वास, मूल्य ओर जिजीविषा से अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है। नयी कविता के सौंदर्य बोध को समझने में भारती की ये पंक्तियाँ कितनी सार्थक हैं –''कुण्ठा, निराशा, रक्तपात, प्रतिशोध, विकृति, कुरूपता, अन्धापन –इनसे हिचकिचाना क्या, इन्हीं में तो सत्य के दुर्लभ कण छिपे हुए हैं, तो इनमें क्यों न निडर धँसूँ?(अन्धा युग : भूमिका से)लक्ष्मीकान्त वर्मा ने नयी कविता के सौंदर्य बोध के विषय में लिखा है कि ''नयी कविता का सौंदर्य बोध जीवन के परिप्रेक्ष्य में जो कीचड़ और काई है, उसके प्रति मुँह पिचकाकर पलायन नहीं करता। उसके साथ विकृतिवादी सामंजस्य ही नहीं स्थापित करता, वरन् उसे सौंदर्य की सापेक्षता में प्रस्तुत करके विवेक और वैज्ञानिकता से परिशोधित करता है ... नयी अभिरूचि मानव यथार्थ को उतनी ही सबल बनाती है जितनी कि सौंदर्य को जीवन से सम्बद्ध समझकर उसको ग्रहण करती है। कैशोर्य उसकी उपलब्धि नहीं है, चमत्कार उसका श्रेय नहीं है, उसकी अभिरूचि नहीं है, अखण्ड–अनन्त उसके लिए शब्दाडम्बर है, इसीलिए वह अपनी सौंदर्यानुभूति में एकांगी एवं कुण्ठाओं से ओतप्रोत होकर वर्जनाओं को नहीं स्वीकार करती। श्रद्धा, विश्वास, आस्था उसकी आत्मनिष्ठा के पूरक हैं और इसलिए वे मात्र शब्द नहीं हैं जिनको सुनकर रोमांच हो जाये या आत्मविभोर कर दे, वरन् ये शब्द उसके सौंदर्य बोध के साथ जीवन के क्षण में व्याप्त होते हैं, तपी हुई संघर्षमय आग में तपते हैं और नये रूप में प्रस्तुत होते हैं।''[11] नयी कविता की शिल्प चेतना भी इस नवीन सौंदर्य चेतना से पूर्णतः प्रभावित है।

व्यक्ति चेतना के धरातल पर भी नयी कविता आधुनिक हिन्दी कविता में सर्वथा अलग ओर विशिष्ट है। इस कविता में व्यक्ति चेतना का छिछला रूप नहीं मिलता, अपितु बौद्धिक और तार्किक रूप मिलता है। नयी कविता की व्यक्ति चेतना अपने आपको समाज से कटकर स्वच्छन्द नहीं स्वीकारती, बल्कि अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व के प्रति सजग रहकर सामाजिक चिंतन में संलग्न होती है। अज्ञेय 'नदी के द्वीप' कविता में व्यक्तित्व के अस्तित्व की बात करके भी, समाज के प्रति स्थिर समर्पण की बात को नही भूलते। भारती 'टूटा पहिया'[12] के माध्यम से इतिहास की सामूहिक गति के झूठी पड़ जाने पर उसे आश्रय देने की बात कहते हैं। नयी कविता में अहम् का विलयन, स्वतंत्रता, व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक दायित्व का अपूर्व सामंजस्य है। छायावाद में भी स्वानुभूति की विवृति और व्यक्तिवाद को महत्व मिला है, लेकिन उसकी व्यक्ति चेतना किसी ठोस सामाजिक चिन्तन को जन्म देने या व्यक्तित्व के निर्माण में सफल नहीं हुई। प्रगतिवाद में व्यक्तिवाद मार्क्सवाद के नीचे दबा हुआ दिखाई देता है और प्रयोगवाद में व्यक्तिवाद अहम् का मारा और हीन भावना से ग्रस्त, निष्क्रिय–सा दिखाई देता है। उसका सामाजिक स्वरूप मुखर दिखाई नहीं देता। (मैं ही हूँ वह पदाक्रांत रिरियाता कुत्ता – अज्ञेय) नयी कविता के व्यक्तिवाद की विशिष्टता उसके व्यक्तित्व निर्माण, स्वतंत्रता और दायित्व बोध में परिलक्षित होती है।

वैज्ञानिक चेतना, बौद्धिक चेतना और प्रयोगशीलता नयी कविता की ऐसी विशेषताएँ हैं जो उसे आधुनिक हिन्दी कविता में अलग पहचान देती हैं, ''नयी कविता के विकास मे विज्ञान ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। विज्ञान की परीक्षण और विश्लेषण प्रणाली के प्रभाववश नये कवियों की अनुभूति और चिन्तना में विशिष्टता आ गयी है। आज का कवि किसी बात को स्वीकृति से पूर्व सोचता है, विश्लेषण करता है और तब कहीं उसे मान पाता है। नये मानव मूल्यों के विकास में भी विज्ञान का हाथ है ... परम्परा के प्रति विद्रोह, रूढ़ियों के प्रति अनास्था का जो भाव नये कवि में विकसित हुआ है ... नियत भाषा या 'एक्योरेसी' की जो प्रवृति मिलती है, वह वैज्ञानिक दृष्टि का ही परिचायक है। ''[13] कुँवरनारायण ने अपनी कविता के विचार पक्ष, संगठन और प्रयोग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अनिवार्यता स्वीकार की है– ''कोई अनुभव सार्थक तभी माना जायेगा, जब वह किसी महत्वपूर्ण परिणामें में प्रतिफलित हो और यह बिना एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखकर चले सम्भव नहीं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेरा अभिप्राय उस सहिष्णु और उदार मनोवृति से है जो जीवन को किसी पूर्वाग्रह से पंगु करके नहीं देखती, बल्कि उसके प्रति एक बहुमुखी सतर्कता बरतती है। कलाकार या वैज्ञानिक के लिए जीवन में कुछ भी आग्राह्य नहीं, उसका क्षेत्र किसी वाद या सिद्धान्त विशेष का संकुचित दायरा न होकर वह सम्पूर्ण मानव परिस्थिति है जो उसके लिए अनिवार्य वातावरण बनाती है। उसका एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना, कम से कम आधुनिक युग में अत्यन्त आवश्यक है। कविता में भी मूलतः कृतित्व की कुछ वैसी ही सी प्रक्रियाएँ निहित हैं जैसी वैज्ञानिक प्रयोगों में।''[14] युग के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बौद्धिकता का प्रसार हुआ है और नयी कविता में यह सर्वत्र व्याप्त है। वाद के संकुचित दायरे से मुक्ति, तटस्थता, रूढ़ि, विद्रोह, तर्क, यथार्थ के प्रति आग्रह, वस्तु और शिल्प के प्रति प्रयोगात्मक दृष्टि नयी कविता में इसी का परिणाम है। नये कवियों की प्रयोगशील दृष्टि ने भावबोध को अधिक आधुनिक और अन्वेषण की ओर प्रवृत्त किया है। आधुनिक हिन्दी कविता के विविध सोपानों – भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवाद में यह चेतना इस रूप में प्रायः नहीं हैं।

आधुनिकता बोध एवं मूल्यान्वेषण नयी कविता की वह विशिष्टता है जो उसे हिन्दी कविता में अलग पहचान देती है। आधुनिकता एक परिवर्तित

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-9* December- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बौद्धिक और युगानुरूप चिंतनशील जीवन दृष्टि है जो वर्तमान जीवन दशाओं पर पूर्णतः वैज्ञानिक, बौद्धिक,संवेदनशील और यथार्थवादी होकर गतिशील, रागात्मक और आंतरिक मूल्य तक पहुँचती है। यह वर्तमान को वर्तमान दृष्टि से देखती है। इस आधुनिकता बोध ने जहाँ एक ओर कविता को युगीन परिवेश के यथार्थ और समसामयिकता के विविध आयामों—संघर्ष, युद्ध, हिंसा, रक्पात, शोषण, सत्ता, राजनीति, यांत्रिकताजन्य संत्रास, भौतिक विसंगतियों, कामवासना, कुण्ठा, अपमानबोध, पराजय, असहायता, अविश्वास, संशय, जड़ता, अस्तित्व चिन्ता, अलगाव, क्षण बोध, अनास्था, परिवेशगत तनाव आदि से जोड़ा, वहीं जीवन को गतिशील बनाने के लिए ''परम्परागत एवं युग सापेक्ष मूल्य, आदर्शवादी यथार्थवादी, विज्ञान युग के बुनियादी, व्यक्ति, समाज राष्ट्र एवं विश्व संदर्भित मूल्यों की स्थापना''[15] का प्रयास किया। परिवेश का चित्रण और मूल्य या आदर्श का चित्रण हिन्दी कविता में नयी कविता से पूर्व भी हुआ है, इस तथ्य से नकारा नहीं जा सकता, लेकिन उसमें आधुनिकता बोध की यह व्यापकता नहीं है। नयी कविता में मूल्यों यथार्थ, बुद्धि और तर्क पर आधारित है। कल्पना, थोथी भावना या संकीर्णता पर नहीं, बौद्धिकता इनकीकसौटी है।

मूल्य संकट के युग में मूल्यान्वेषण की पीठिका पर खड़ी नयी कविता आस्था, जिजीविषा की अपार शक्ति से सम्पन्न कविता है। यह अस्तित्व बोध और जिजीविषा की कविता है। अज्ञेय, भारती, दुष्यन्तकुमार, भारतभूषण अग्रवाल, केदारनाथसिंह, गिरिजा कुमार माथुर, कुंवरनारायण आदि सभी कवियों में यह आस्था, जिजीविषा, अस्तित्व चिन्तन प्रभूत मात्रा में है। कवियों की आस्था जीवन के प्रति, परिवेश के प्रति, नवीनता के प्रति, अस्तित्व के प्रति और व्यक्तित्व के प्रति दिखाई देती है। कवि मानता है कि ''ढ़ला हुआ सूरज / सैंकड़ों सूरज बनकर उग रहा है / हमारी धमनियों में।''[16] यह आस्था, यह जिजीविषा, यह अस्तित्व चिन्तन उसे आधुनिक हिन्दी कविता के किसी भी सोपान से अलग कर सकता है।

अस्तित्ववादी चिन्तन और क्षण बोध नयी कविता की ऐसी विशेषताएँ हैं जो उसे विविध आयाम देकर पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से पृथक् करती हैं। वर्तमान की युद्धों की विभीषिका, यांत्रिक जीवन की जड़ता, भौतिकता, जीवन के खोखलेपन एवं मूल्य क्षरण ने मानव अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है, नयी कविता अस्तित्व संकट के आयामों को उद्घाटित करती हुई जिजीविषा, संघर्ष और आस्था का चित्रण करती है। आधुनिक हिन्दी कविता में नयी कविता की यह महती और विशेष प्रवृति है। अस्तित्व चिन्ता प्रकट करता हुआ संजय कहता है ——

पर मैं तो हूँ निष्क्रिय/ निरपेक्ष सत्य
मार नहीं पाता हुँ/ कर्म से पृथक
खोता जाता हूँ क्रमशः/अर्थ अपने अस्तित्व का। (अंधायुग)

नया कवि जीवन के प्रत्येक क्षण को मूल्यवान और स्वतंत्र समझकर उसे भोगना चाहता है। नरेश मेहता ने लिखा है —

यदि तुम क्षणों की इस पृथकता को / देख सके होते तो
राघव ! परितापित कभी नहीं होते। (संशय की एक रात)

नयी कविता में कथ्य की व्यापकता किसी की पूर्ववर्ती काव्यधारा से अधिक है। कवि की संवेदना बहुत व्यापक है। वह गाँव से लेकर नगर और महानगर तक, संसद से लेकर सामान्य, अकिंचन जनता तक, पुराण साहित्य से लेकर विज्ञान तक, पारिवारिक दैनिक जीवन से लेकर राष्ट्रीय—अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम और परिवेश तक, सार्वकालिक अनुभूति से लेकर क्षणानुभूतियों तक, व्यक्ति से लेकर समष्टि तक सर्वत्र व्याप्त है। छायावाद का कथ्य प्रकृति—प्रेम और सौंदर्य तक सीमित रहा है, प्रगतिवाद का कथ्य मजदूर—किसान—पूँजीवाद और राजनीति की सीमा में बद्ध रहा, भारतेन्दु, द्विवेदी युग का कथ्य देश—प्रेम और सामाजिक सुधान के इतिवृत्त से घिरा दिखाई देता है। वास्तव में नयी कविता की विषयगत परिधि सर्वाधिक व्यापक है, उसकी संवेदना के धरातल व्यापक हैं। नरेश मेहता की ''समय देवता'' कविता को देखकर ऐसा लगता है कि नयी कविता की संवेदना विश्वव्यापी और युगव्यापी है। ''नयी कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस् व्यक्ति की संवेदनात्क प्रतिक्रिया है ...नयी कविता का स्वर ही विविध है।''[17] नयी कविता में प्रकृति प्रेम, नारी और काम को नयी दृष्टि मिली है। नयी कविता ने इनको अधिक से अधिक यथार्थ और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया है। विज्ञान, बुद्धिवाद तथा मानव अस्तित्व की प्रतिष्ठा के कारण नयी कविता में ईश्वर और धर्म के प्रति भी नवीन दृष्टि मिलती है। ईश्वर और धर्म यथार्थ के ताप में पिघलकर व्यंग्य के शिकार दिखाई देते है। व्यक्ति स्वयं अपने कर्मों द्वारा अपने भविष्य और अस्तित्व का निर्धारण करता है, इस भावना को बल मिला —

केवल कर्म सत्य है/मानव जो करता है, इसी समय
उसी में निहित है भविष्य/युग—युग तक का!
आचरण में ही मानव अस्तित्व की सार्थकता है।[18]

नयी कविता भावना, आनन्द और कल्पना के स्थान पर चिंतनशील और वैचारिक अनुभूति, बुद्धि, तर्क और विज्ञान से अधिक प्रभावित होने के कारण परम्परागत रसवादी धारणा से अलग है। उसमें रागात्मकता की अपेक्षा बौद्धिकता और वैचारिकता अधिक होने के कारण मनुष्य को रस भी भाँति अलौकिक आनन्द की भूमि में नहीं पहुँचाती, अपितु चिन्तन के लिए प्रेरित करती है। भारती ने लिखा है ''कविता का मुख्य कार्य आज के युग में रूढ़ अर्थों में रसोद्रेक मात्र न रहकर प्रभाव डालना हो गया है।''[19] नयी कविता ने व्यक्ति चेतना के धरातल पर जिस लघुमानव या सामान्य मानव की प्रतिष्ठा की है, वह

पूर्ववर्ती काव्य धाराओं में प्रायः नहीं मिलती है। छायावाद में जो मानवतावादी धारणा मिलती है, उसमें उसे आदर्श और श्रेष्ठतम बनाकर देवत्व प्रदान किया, उसमें यथार्थ और व्यावहारिकता नहीं है। ''प्रगतिवाद में उसका मूल्य ही सामाजिक समस्याओं में विलीन हो गया, नये कवियों ने लघु मानव की प्रतिष्ठा की।[20] यह मानव अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक है। अहं को अपनाता तो है, किन्तु अवसर आने पर समाज में विसर्जित भी कर देता हे। नयी कविता का मानव आस्था, अनास्था, संकल्प–विकल्प, निश्चय–अनिश्चय, विवशता–परवशता आदि सभी स्थितियों में पाठक के सामने आता है।''[21] नयी कविता का यह मानव किसी वर्ग विशेष का नहीं, यथार्थ समाज में रहने वाला है, जो अपनी लघुता में भी संघर्षरत है, अपनी लघुता में भी सजग, सक्रिय, जागरूक और आस्थावान है। नयी कविता में रूढ़ि विद्रोह किसी भी पूर्ववर्ती काव्यधारा से अधिक है। वह ऐसी किसी रूढ़ि या गलित परंपरा का निर्वाह करने में असमर्थ है जो मानव विकास में बाधक और अप्रासंगिक है। नयी कविता इस अर्थ में भी सर्वथा भिन्न प्रतीत होती है कि उसमें किसी वाद विशेष के प्रति आग्रह नहीं है। वह किसी आयातित विचारधारा से आक्रान्त नहीं है, वह भारतीय जीवन की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की उपज है। नयी कविता में दृष्टि की व्यापकता और सार–संग्रही प्रवृत्ति है। इसलिए सभी विचारधाराओं से शिक्षा ग्रहण करती है। उनका तो यही मानना है कि प्रगति पिछलग्गूपन नहीं है और जीवन आगे बढ़ने के लिए दूसरों का मुँह नहीं ताकता।''[22]

नयी कविता शैल्पिक दृष्टि से प्रयोगधर्मी कविता है इसलिए उसने शिल्प में युगानुरूप क्रांतिकारी परिवर्तन करके शिल्प के नये प्रतिमान स्थापित किए हैं। वह भाषा, शब्द, प्रतीक, बिम्ब, उपमान–योजना, काव्य–रूप, छन्द, लय आदि की दृष्टि से अन्य काव्य धाराओं से भिन्न है। नयी कविता को आधुनिक हिन्दी कविता से अलगाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिंदु है–प्रयोगधर्मिता और उसके परिणामस्वरूप प्राप्त नवीन शिल्प विधान। नये कवियों ने भाषा को छायावादी रेशमी तानों–बानों और कृत्रिम आभिजात्य से तथा प्रगतिवादी नीरसता, शुष्कता और अनगढ़ प्रसादात्मकता से मुक्त कर यथार्थ रूप दिया। वह सामान्य बोलचाल के निकट होकर भी कलात्मक और बिम्बात्मक है तथा कृत्रिम आभिजात्य से दूर। नयी कविता की भाषा का क्षेत्र पूर्ववर्ती काव्य धाराओं से बहुत व्यापक है। इसके शब्द, प्रतीक, उपमान, बिम्ब विविध क्षेत्रों से गृहीत किए गए हैं जो परम्परागत होकर भी नवीन अर्थवत्ता से युक्त है और सर्वथा नवीन भी। नयी कविता छन्द विधान की दृष्टि से तो आधुनिक हिन्दी कविता में सर्वथा अलग ओर मुक्त भूमि पर खड़ी है। वह जहाँ लय और प्रवाह पर आधारित मुक्त छंद में रची गयी है, वहीं छन्द मुक्त भी।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी कविता में नयी कविता का अपना अलग व्यक्तित्व और पहचान है, उसने अपने युग को सम्पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति और दिशा दी है। तर्क, बुद्धि, ज्ञान, विवेक और वैज्ञानिकता उसके दृष्टिबोध के महत्वपूर्ण बिन्दु है। उसने पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से रस ग्रहण करके भी अपना नया रूप–स्वरूप प्राप्त कर हिन्दी कविता के इतिहास में एक मानक काव्य–सृजन किया, जिसका हिन्दी साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *नई कविता : स्वरूप और प्रवृत्तियां–उषा कुमारी, प्रभात प्रकाशन, 2017 पृ.सं. 46–78*
2. https://www.hindikunj.com/2018/05/nayi-kavita.html *12 मई 2018*
3. *हिन्दी नव लेखन– रामस्वरूप चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ काशी 1960, पृ.सं.15*
4. *नयी कविता के प्रतिमान– डॉ.लक्ष्मीकांत वर्मा भारती प्रेस प्रकाशन दरभंगा रोड इलाहबाद प्र.सं. 1957 पृ. 57–58*
5. *जो बंध नहीं सका–गिरिजाकुमार माथुर पृ.सं. 4*
6. *नयी कविता में मिथक–डॉ.राजकुमार पृ.सं.68*
7. *तीसरा सप्तक–(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना) सं. अज्ञेय भारतीय ज्ञानपीठ,काशी पृ. सं. 222*
8. *तीसरा सप्तक–(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना) सं. अज्ञेय भारतीय ज्ञानपीठ,काशी पृ.सं. 230*
9. *सातगीत वर्ष–धर्मवीर भारती पृ.सं.69*
10. *आत्मजयी–कुंवरनारायण पृ.सं.7*
11. *नयी कविता के प्रतिमान– डॉ.लक्ष्मीकांत वर्मा भारती प्रेस प्रकाशन दरभंगा रोड इलाहबाद प्र.सं.1957पृ.सं.82–83*
12. *सातगीत वर्ष–धर्मवीर भारती पृ.सं.68*
13. *नयी कविता नये धरातल–डॉ.हरचिरण शर्मा पदम प्रकाशन जयपुर पृ.सं.5*
14. *तीसरा सप्तक–सं.अज्ञेय भारतीय ज्ञानपीठ,काशी पृ.सं. 154–155*
15. *नयी कविता के प्रबंध काव्यः शिल्प और जीवन दर्शन –डॉ.उमाकांत गुप्त प्र.सं.वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1988, पृ.सं.298*
16. *पक गई है धूप–रामदरश मिश्र पृ.सं.103–105*
17. *नयी कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध : मुक्तिबोध विश्वभारती प्रकाशन, दिल्ली 1964पृ.सं.12*
18. *अंधायुग–धर्मवीर भारती, किताब महल इलाहबाद 1974 पृ. सं.34*
19. *दूसरा सप्तक–सं.अज्ञेय प्रगति प्रकाशन,नयी दिल्ली, 1951, पृ.सं.159*
20. *नयी कविता का मूल्यांकन– डॉ.हरिचरण शर्मा आशा प्रकाशन गृह,नयी दिल्ली 1972 पृ.सं.192*
21. *नयी कविता का मूल्यांकन– डॉ.हरिचरण शर्मा आशा प्रकाशन गृह,नयी दिल्ली 1972पृ.सं.192*
22. *तीसरा सप्तक(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना) : सं.अज्ञेय भारतीय ज्ञानपीठ,काशी पृ.सं.224*